माड्यूल 1 वीडियो 1: हम यहां कैसे पहुंचे?

नमस्कार। इस पाठ्यक्रम के पहले माड्यूल 'महामारी में पत्राकारिताः कोविड-19 को वर्तमान और भविष्य में कवर करना' में आपका स्वागत है। मैं मेरीनमैकेना हूं, अटलांटा में रहने वाली एक पत्राकार और लेखिका। मैं अंग्रेजी में पाठ्यक्रम की लीडर और प्रशिक्षक हूं। इन चार हफ्रतों में, आप फ्रैंकोफोन्सके लिए सहयोगी प्रशिक्षक यवेस सियामा से भी मिलेंगे। अमांडा रासी पुर्तगाली में पाठ्यक्रम प्रस्तुत करेंगी, जबकि फेडरिको कुकसो स्पेनिश मेंपाठ्यक्रम का संचालन करेंगे।

हम सभी की ओर से इस पाठ्यक्रम में भाग लेने के लिए आपका ध्न्यवाद।

इससे पहले कि हम इस सप्ताह के विषय पर बात करें, मैं आपको इस बारे में थोड़ा बता दूं कि यह कैसे काम करेगा। इस पाठ्यक्रम के प्रत्येक माड्यूलमें, हम इस महामारी के एक पहलू की जांच करने की तैयारी से लेकर संभावित रोकथाम की प्रतिक्रिया जानेंगे और इसके बाद हमारा जीवन कैसा होगा।हमारा लक्ष्य बेहतरीन घटनाक्रम और सर्वोत्तम पत्राकारिता कौशल और प्रथाओं का वर्तमान में कैसे इस्तेमाल किया जाए, के बारे में बात करना है।लेकिन हम समझते हैं कि यह हम सभी के लिए एक नई स्थिति है, क्योंकि इस महामारी का रोगजनक एक वायरस है जिसे दुनिया ने पहले कभी अनुभवनहीं किया है। इसलिए हर हफ्रते, आपके प्रशिक्षक महामारी के बारे में जानकारी देने के लिए किसी वैज्ञानिक या अन्य विशेषज्ञ स्रोत की मेजबानी करेंगेजो इसे कवर कर रहे हैं ताकि वे अपनी विशेषज्ञता साझा कर सकें। इस माड्यूल में हम प्रसि(रोग और जैव रक्षा विशेषज्ञ माइकल टी ओस्टरहोम तथालेखिका और पत्राकार सोनिया शाह के विचार जानेंगे।

एक अंतिम बात और, इस पाठ्यक्रम में पूरी दुनिया से लोग शामिल हो रहे हैं। यह रोमांचकारी है, लेकिन साथ ही चुनौतीपूर्ण भी है। जैसे कि यहमहामारी दुनिया भर में पहुंच रही है, हर देश इसे अलग तरह से अनुभव कर रहा है और हर देश इससे निपटने के लिए एक अलग जन स्वास्थ्य रणनीतिअपना रहा है और विभिन्न प्रकार के संसाध्न खर्च कर रहा है। इसलिए यह संभव है कि जहां आप रहते हैं या आप अभी जो काम कर रहे हैं, उसकेअनुसार हमारे द्वारा सुझाए गए कुछ दृष्टिकोण या विचार आपके लिए प्रासंगिक न हों।

फिर भी हमें उम्मीद है कि आप इस समुदाय का अनुभव प्राप्त करने और घटनाक्रम के बारे में जानने के लिए हमारे साथ जुड़े रहेंगे। इस पर एक बुकक्लब के रूप में विचार करें जो दुनिया का अंत नहीं है।

यह मेरी प्रारंभिक टिप्पणी है। आइए, शुरू करते हैं।

मई 2018 के मध्य में, जबकि इसे दो साल पूरे नहीं हुए हैं, फ्रैंकफर्ट, जर्मनी में एक वायरस सामने आया था। मई का मध्य फ्रलू के मौसम के बाद कासमय होता है, लेकिन यह वायरस फ्रलू की ही तरह था, जिससे लोगों को खांसी और छींकें आईं। यह एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में फैला। इससे 316 लोग बीमार पड़ गए और उनमें से 32 यानी 10 प्रतिशत की मृत्यु हो गई।

इसके बाद, महासागर के पार वेनेजुएला में कराकस में उसी सिंड्रोम से लगभग 100 लोग बीमार पड़ गए। उनमें से कुछ को मस्तिष्क में सूजन, इन्सेफेलाइटिस हो गया, जिससे वे कोमा में चले गए। उस देश में 20 लोग मारे गए। लेकिन वेनेजुएला के राष्ट्रपति ने इनकार किया कि यह कोई प्रकोपथा और वायरस फैलता रहा।

यह विदेश से गर्मियों से लौटने वाले एक कालेज के छात्रा के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका में आया। चूंकि रोगजनक दुनिया भर में तेजी से फैलताहै, स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने महसूस किया कि ऐसा कोई उपचार नहीं था जो इसे रोक सके और कोई टीका उपलब्ध् नहीं था। 20 महीने बाद जब तक कोईवैक्सीन आ पाती, दुनिया भर में एक सौ पचास मिलियन लोग मर जाएंगे।

यदि आप यह महसूस कर रहे हैं कि आपने कभी भी इतने बड़े पैमाने पर प्रकोप के फैलने के बारे में कभी नहीं सुना था, तो चिंता न करें ऐसा वास्तव मेंनहीं हुआ था। यह एक यु(के खेल में एक तरह का स्वांग था, जिसे मई 2018 में

बाल्टीमोर में जान्स हापकिंस विश्वविद्यालय के शोध्कर्ताओं ने लिखाऔर होस्ट किया था। इस स्वांग के लेखकों ने अपनी इस काल्पनिक बीमारी को क्लेड एक्स नाम दिया था। लेकिन अपने इस यु(के खेल से उन्होंने जोनिष्कर्ष निकाला वह पूरी तरह से वास्तविक था। उन्होंने कहा कि यदि वास्तव में कोई महामारी पैदा हुई, तो दुनिया इसका सामना करने के लिए तैयारनहीं होगी।

और अब हम जानते हैं कि वे कितने सही थे।

क्लेड एक्स एक चेतावनी थी। इसने इस कटु सत्य से पर्दा उठा दिया कि बीमारियां उनका पता लगाए जाने से कहीं अध्कि तेजी से फैलती हैं। यह भी किटीके पलक झपकते ही नहीं बनाए जा सकते। राजनीति जन स्वास्थ्य के आड़े आ सकती है। लेकिन इसके निर्माताओं का कहना है कि यदि इस पर ध्यानदिया जाए, वित्त-पोषण और राजनीतिक इच्छाशक्ति हो तो इन कमजोरियों से पार पाया जा सकता है। हालांकि, उनके निष्कर्ष लगभग दो साल पहलेपहुंच गए थे, लेकिन इस पर किसी ने भी कुछ नहीं किया। आप जहां भी काम कर रहे हैं, इस महामारी को कवर करते समय यह पता लगाएं कि क्याकोई योजना बनाई गई थी और यदि बनाई गई थीं, तो क्या उसे अमल में लाया गया था। क्लेड एक्स अद्वितीय नहीं था। यह महामारी के बारे मेंचेतावनियों की एक लंबी श्रृंखला थी जो 20वीं शताब्दी की शुरुआत में सभी जगह फैल गई थी।

यदि आप इसके बारे में पहले से नहीं जानते थे, तो अब तक आपने शायद 1918 की फ्लू महामारी के बारे में जरूर सुन लिया होगा, जो संभवतः संयुक्तराज्य अमेरिका में प्रथम विश्व यु(की अगुवाई करने वाले सैनिकों में शुरू हुई और दुनिया भर में फैल गई। 1918 के फ्लू में लगभग दस करोड़ लोग मारेगए। यह पिछली सदी की बड़ी महामारी थी, लेकिन अकेली नहीं थी। 1957 में इन्फ्लूएंजा महामारी फैली जिसने पूरी दुनिया में लगभग 15 लाख लोगोंको मार दिया था। 1968 में एक और महामारी फैली जिसने 10 लाख से थोड़ा कम लोगों को मार दिया। 1997 में हांगकांग में एच5एन1 बर्ड फ्लूमनुष्यों में फैल गया। तब से, इसने इसके संपर्क में आने वाले लोगों में से आध्े से अध्कि को मार डाला है। और 2009 में एच1एन1 फ्लू महामारीआई, जिसकी आप में से कुछ लोगों को याद होगी, जो उस समय हल्की लग रही थी, लेकिन इससे पूरी दुनिया में 284,000 से अध्कि लोगों की मौत होगई।

ये सभी फ्लू महामारी थीं, लेकिन सौ से अध्कि वर्ष की अवध् में सांस की अन्य महामारियां भी हुई हैं। 2003 में सार्स, दक्षिणी चीन में पहलीकोरोनावायरस महामारी पैदा हुई, जो दुनिया भर में फैल गई। 8,000 से थोड़ा अध्कि लोग इसकी चपेट में आ गए और 774 लोगों की मौत हो गई।मर्स, जो कोरोनोवायरस के कारण हुआ था, पहली बार 2012 में सऊदी अरब में देखा गया था और इससे अब तक लगभग 2500 लोग बीमार हो चुकेहैं, जिनमें से 858 मारे गए हैं।

इन सभी महामारियों से हमने सबक सीखे जिसे हमें अगली महामारी के आने से पहले अमल में लाया जाना चाहिए था। 1918 के फ्लू और सार्स ने 85 साल बाद यह दिखा दिया कि दुनिया भर में रोगाणु कितनी तेजी से फैल सकते हैं। 2009 का फ्लू, जो नियमित फ्लू के मौसम के बाद आया था, नेदिखाया कि जल्दी टीका तैयार करने की प्रक्रिया कितनी जटिल है और हमें टीके के दुष्प्रभावों पर नज़र रखने के लिए किस तरह से तैयार रहना चाहिए।

एच5एन1 फ्लू, सार्स और मर्स सभी ने यह स्थापित किया कि वायरस के जानवरों से मनुष्यों में आने के तरीकों पर नज़र रखना कितना महत्वपूर्ण है, क्योंकि कोई भी वायरस जो किसी अन्य प्रजाति से हमारे बीच आता है, वह ऐसा होगा जिसकी हमारे पास न तो कोई प्रतिरक्षा होगी और न ही कोईबचाव।

उन सभी प्रकोपों और इनके अलावा जिन बातों का मैंने उल्लेख नहीं किया है, यह बताती हैं कि दुनिया भर के महामारीविदों को इनके बारे में पहले हीपता चल गया था। हर साल उभरने वाली नई बीमारियों और प्रति वर्ष प्रकोपों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

उन महामारियों के कारण, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1999 और 2005 में एक महामारी नियोजन मार्गदर्शिका विकसित की थी। इस पर एक जांच सूचीप्रकाशित की गई जिस पर इसके सदस्य देशों की सरकारों को कार्रवाई शुरू करनी थी। इसमें दुनिया की लगभग हर सरकार को महामारी से बचने केलिए एक योजना बनाने को कहा गया था।

संयुक्त राज्य अमेरिका में, हमारे पास 2005 से एक महामारी योजना है, फिर भी पश्चिम अफ्रीका में 2014 की इबोला महामारी के बाद अमेरिका और दुनिया इससे निपटने के लिए तैयार नहीं हो रहे हैं, जिसने दुनिया को यह बताया कि संक्रामक बीमारियांकितनी जल्दी फैल सकती हैं तथा देशों और क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को अस्थिर कर सकती हैं।

इसके बाद अरबपति बिल गेट्स ने क्या कहा। आज, दुनिया का किसी ओर चीज़ से तबाह होने का इतना अध्कि जोखिम नहीं दिखाई देता। बल्कि यहइस तरह से दिखता है। यदि अगले कुछ दशकों में कोई चीज़ 1 करोड़ से अध्कि लोगों को मारेगी, तो यह किसी यु(से नहीं बल्कि ऐसा किसी अत्यध्किसंक्रामक वायरस से होने की संभावना है। मिसाइल नहीं, बल्कि रोगाणु। अब, इसका कारण यह है कि हमने परमाणु से बचने के लिए एक बड़ी राशि कानिवेश किया है। लेकिन हमने वास्तव में महामारी को रोकने के लिए किसी प्रणाली में बहुत कम निवेश किया है। हम अगली महामारी से निपटने के लिएतैयार नहीं हैं।

2017 में विश्व बैंक ने यह चेतावनी दी है। अब हम यह जान गए हैं कि वह दिन दूर नहीं जब दुनिया एक और महामारी का सामना करेगी। रोगाणुओं मेंअपनी मर्जी से अपना स्वरूप बदलने की क्षमता होती है जो उन्हें जीवित रहने और परिस्थितियों के अनुकूल बनने में मदद करते हैं, और यह कि नए रोगाणुनिश्चित रूप से हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को भेदने का कोई न कोई तरीका निकाल ही लेते हैं। इसके बावजूद, जैसे ही पिछले प्रकोप से उत्पन्न विनाश कीयादें ध्ुंध्ली पड़ने लगती हैं, हम आत्मसंतुष्ट हो जाते हैं और महामारी से निपटने की तैयारियों में निवेश करने के मामले को फिर से ठंडे बस्ते में डाल देतेहैं।

तो यह अब तक की सबसे बड़ी कहानियों में से एक है, कि जहां आप रहते हैं, क्या इन सिफारिशों का पालन किया गया, फिर चाहे वह संयुक्त राज्यअमेरिका हो या कनाडा या यूरोप या विश्व का दक्षिणी हिस्सा? क्या किसी योजना को लिखित रूप दिया गया था? क्या इसका पालन किया गया? क्याउन्होंने केवल राष्ट्र को कवर किया या उन्होंने राज्यों, प्रांतों और शहरों को केवल उनका परिवहन नेटवर्क, अस्पताल को आपूर्तियां और स्कूलों को भोजनही उपलब्ध् कराया था?

शायद यही सबसे महत्वपूर्ण था। तो उन्होंने क्या छोड़ दिया?

ग्लोबल हेल्थ सिक्योरिटी इंडेक्स नामक एक अंतर्राष्ट्रीय रैंकिंग के अनुसार, यदि दुनिया में संक्रामक खतरों से सबसे अच्छी तरह से निपटने वाला कोईदेश है तो वह संयुक्त राज्य अमेरिका है। एक सौ निन्यानवे राष्ट्रों में से रैंक नंबर एक पर। इसके बावजूद, एक स्वतंत्रा द्विदलीय परिषद, सीएसआईएसअमेरिकी स्वास्थ्य सुरक्षा सुदृढ़ीकरण आयोग ने पिछले साल नवंबर में कहा, वास्तव में, अमेरिकी लोग सुरक्षित नहीं हैं।

और यह सच निकला।

2017 में, टाइम पत्रिका ने दुनिया को चेतावनी दी कि हम अगली महामारी के लिए तैयार नहीं हैं। 2018 में वायर्ड पत्रिका में, मैंने भविष्यवाणी की थीकि यदि चीन में सांस से संबंध्ित कोई महामारी शुरू हुई, तो दुनिया के अस्पतालों में मास्क और सुरक्षात्मक उपकरणों की आपूर्ति बाध्ित हो जाएगीक्योंकि उनमें से अध्किांश चीन में बनते हैं और चीन अपनी आवश्यकता के अनुसार ऐसे उपकरणों को रखने के लिए वितरण संबंध करार तोड़ देगा।

दुख की बात है कि मैं सही थी।

आपको इस माडयूल में योजना की विफलता के संबंध् में ऐसे और उदाहरण भी पढ़ने को मिलेंगे। हमें उम्मीद है कि वे आपको लेख लिखने में आपकामार्गदर्शन करेंगे कि आप जहां रहते हैं वहां आप कैसे महामारी के बारे में जागरूकता फैला सकते हैं और योजना बना सकते हैं, और इसमें निरंतर योगदानदे सकते हैं। इन्हें एक बार पढ़ लें। इस मॉडयूल के बारे में चर्चा मंच में अपने विचारों को साझा करें। यदि आप वैकल्पिक फेसबुक समूह में शामिलहुए हैं, तो उस पर भी हमसे बात करें।

महामारी का किस हद तक अनुमान लगाया या नहीं लगाया गया था, और आप जहां रह गए थे, उसे संवेदनशील ही छोड़ दिया गया था। यह सभी यहसमझने में महत्वपूर्ण होगा कि हम अपने अगले माडयूल के बारे में क्या बात करेंगे, कोविड-19 के बारे में अब और क्या सच सामने आने वाला है।